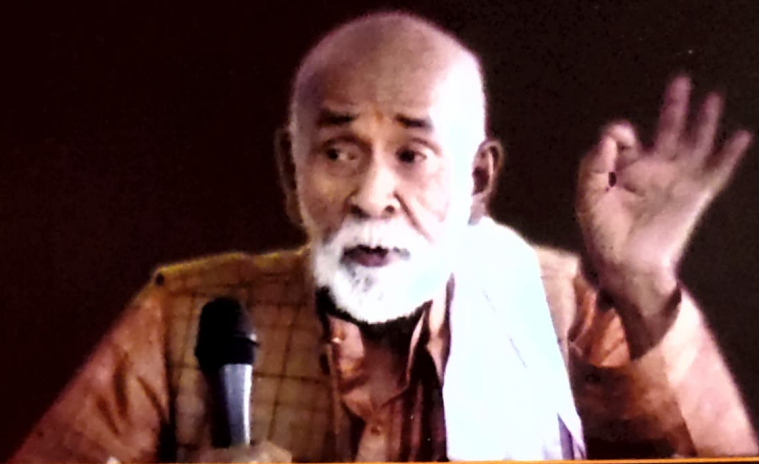




लोक और वेद के अभिनव आचार्य
पं.दुर्गाचरण शुक्ल
“ लोके च वेदे च ”



डॉ.सरोज गुप्ता
पं.अरुण शुक्ल



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

लोक और वेद के अभिनव आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल

संपादक

डॉ. सरोज गुप्ता

पं. अरुण शुक्ल

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२१

ISBN 978-93-90143-45-0

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

संतोषी कम्प्यूटर्स, दिल्ली

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ६६६०२३६८६१६

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : १०००.०० रुपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	- डॉ. सरोज गुप्ता	13
-----------	-------------------	----

प्रथम खण्ड : अ- काव्यांजलि

• अभिनन्दन-पत्र	- श्री हरिविष्णु अवस्थी	29
• हे क्रांति प्रिय ! शत्-शत् नमन	- श्री गुणसागर सत्यार्थी	30
• एक गम्भीर और अध्यात्म चिंतक	- डॉ. दुर्गेश दीक्षित	31
• देवी के लाल	- डॉ. कन्हैयालाल वर्मा 'बिन्दु'	34
• पं दुर्गाचरण शुक्ल को नमन	- श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव	36
• गुरु पद वन्दन	- पं. सुधाकर शर्मा	38
• ॐ श्री गुरुवे नमः	- श्री संजय पाण्डेय	39
• ॐ नमः पूर्ण गुरुवै नमः	- डॉ. सरोज गुप्ता	40

प्रथम खण्ड : ब- पाथेय

• पाथेय	49
• वेद तंत्र और तंत्रसार	52
• मंत्र व जप क्या है ?	57
• तंत्र और श्रीतंत्रालोक : आचार्य अभिनव गुप्त की दृष्टि में	59
• पराद्वैत शैव सिद्धांत आचार्य : अभिनव गुप्त की दृष्टि में	68
• यंत्र क्या है?	72
• प्रथम आह्निक	78
• द्वितीय आह्निक	80
• तृतीय आह्निक	82
• चतुर्थ आह्निक	84
• पंचम आह्निक	86
• षष्ठम् आह्निक	93
• सप्तम् आह्निक	97
• प्रतिभा अद्वैत शैव दर्शन की दृष्टि में	103
• वीणा के अनसुने स्वर	112

द्वितीय खण्ड : अ-जीवन दर्शन

• आत्मकथन	- पं. ओमप्रकाश तिवारी	123
• साक्षात्कार	- डॉ. सरोज गुप्ता	129

• आचार्य पं श्री दुर्गाचरण शुक्ल एक बहुआयामी व्यक्तित्व	-श्री जे. पी. एन. पाण्डेय	305
• संस्मरण	-अनूप मिश्रा	307
• आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल का प्रेरक बहुआयामी व्यक्तित्व	-डॉ. अवधेश कुमार	309

चतुर्थ खण्ड : अ-रचना पक्ष

• आचार्य शुक्ल के कृतित्व के चार आयाम	-श्री प्रभुदयाल मिश्र	313
• आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल की साहित्य साधना	-डॉ. लखनलाल खरे	326

चतुर्थ खण्ड : ब-पुस्तक प्रसंग

1. बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	-पं दुर्गाचरण शुक्ल एवं कैलाश बिहारी द्विवेदी	337
• प्रकाशकीय	-डॉ. गंगाप्रसाद बरसैया	338
• औनामासी धम्म	-पं दुर्गाचरण शुक्ल	340
2. बुन्देली व्युत्पत्ति कोश		
• बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोश एक अभिनव पहल	-आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल	346
• समीक्षा -बुन्देली व्युत्पत्ति कोश	-डॉ. रामनारायण शर्मा	347
• बुन्देली भाषा का लालित्य एवं शब्द सम्पदा	-श्री कपिल देव तैलंग	352
• बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोश एक अमरकृति		
3. महर्षिअगस्त्य दृष्ट ऋग्वेद मंत्र भाष्य	-श्री संतोष कुमार पटैरिया	357
• मंगलाशंसीयम्	-पं. दुर्गाचरण शुक्ल	363
4. ऋषि हयग्रीवकृत 'शाक्त दर्शनम्' एवं अगस्त्यकृत 'शक्ति सूत्रम्'	-प्रो. रूपकिशोर शास्त्री	363
• पूर्वपाठिका	-पं दुर्गाचरण शुक्ल	365
• शिवत्व प्राप्ति स्रोत : शाक्त दर्शनम् एवं शक्ति सूत्रम्	-आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल	365
5. ब्रह्मवादिनी - दृष्ट मन्त्र भाष्य एवं अवदान	-डॉ. सरोज गुप्ता	382
• आमुख	-पं. दुर्गाचरण शुक्ल	385
	-पं. दुर्गाचरण शुक्ल	385

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल का प्रेरक बहुआयामी व्यक्तित्व

लोक और वेद के मर्मज्ञ, माँ पीताम्बरा पीठाधीश्वर के परमशिष्य आचार्य पं. श्री दुर्गाचरण शुक्ल अद्वितीय प्रतिभा के धनी हैं। आचार्य जी की प्रसिद्धि का मूल कारण उनकी भारतीय ज्ञान-साधना है। विभिन्न विषयों के मर्मज्ञ आचार्य पं. श्री दुर्गाचरण शुक्ल जी चिंतनशील साहित्य सर्जक हैं और इनका साहित्यिक योगदान विश्व-साहित्य की अमूल्य निधि है। विविध प्रकार के लेखन में उनकी बहुआयामी रचनाशीलता की छाप सहज ही देखी जा सकती है। आचार्य जी साहित्य जगत के उन उत्कृष्ट लेखकों में हैं, जिन्होंने संस्कृत के साथ हिन्दी साहित्य में चिन्तनशीलता को सृजनशीलता के साथ घुलाने-मिलाने की निरन्तर चेष्टा की है। निबन्धों में उनके व्यक्तित्व की चिन्तन चेतना प्रबल रूप से देखी जा सकती है।

सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी और भाषा पर भी सबल अधिकार के कारण आचार्य जी ने साहित्य, धर्म, दर्शन, गणित, विज्ञान, बालमनोविज्ञान, यंत्र-तंत्र एवं वास्तुशास्त्र के साथ भारतीय वाङ्मय के अधिकांश क्षेत्रों पर अधिकारपूर्ण अपनी लेखनी चलायी है। भारतीय ज्ञान-सम्पदा के क्षेत्र में इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में विविध विषयों पर अनेक लेख प्रकाशित हो चुके हैं और यह क्रम आज भी निरन्तर जारी है। विद्वानों का कहना है कि मनीषियों से आरम्भ होने वाली भारतीयता ही हमारी सच्ची राष्ट्रीयता है। इस अर्थ में आचार्य पं. श्री दुर्गाचरण शुक्ल के अवदान से यह सुनिश्चित है कि वे भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और साहित्य के आप सच्चे संवाहक हैं।

मेरा सदैव यह विश्वास रहा है कि ज्ञान मनुष्य अंग का पृष्ठवंश है। मनुष्य का जीवन, जीवन की गति और उसकी संक्रान्ति ज्ञान पर ही आधारित है। व्यक्ति का किसी भी कर्म में सफल होना कोई बड़ी बात नहीं है, बल्कि सार्थक होना उसके सर्जक होने का सबसे बड़ा पुरस्कार है। ऐसी ही सार्थकता आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जैसे महान मनीषी में दिखाई देती है। इसे अतिशयोक्ति नहीं माना जाना चाहिए कि आचार्य पं. श्री दुर्गाचरण शुक्ल ने भी अपने समय में अपनी साधना और सर्जनात्मकता से यह सार्थकता अर्जित कर यह प्रमाणित किया है कि पूर्वजों की तपस्वी परम्परा का अन्त नहीं हुआ है, भले ही तप के तरीके बदल गए हों और अनेक सर्जकों में साधना का सामर्थ्य क्षीण हो गया हो। यहाँ यह कहना समीचीन होगा कि यह 'अभिनन्दन ग्रन्थ' उन्हीं सामाजिक अवदानों का एक प्रामाणिक दस्तावेज है।

इस 'अभिनन्दन ग्रन्थ' में गुरुदेव पं. दुर्गाचरण शुक्ल का व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन दर्शन बखूबी समाहित है। साथ-ही विद्वत्जनों का मूल्यांकन और आत्मीय शिष्यों एवं परिजनों का संस्मरण सन्निहित है। आचार्य जी शैव, वैष्णव और शाक्त पुनरुत्थान की नई भावुकता तथा ठर्जस्वित्ता के साथ उभरकर सामने आते हैं तथा मानवीय जीवन और धर्म-साधना की परम्परा को समग्रतम रूप से नवचेतना में ढालने का जो अथक प्रयास किया है, वह चिर अभिनन्दनीय है। इसप्रकार विचारों का यह पुंज मनीषी आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल के जीवनदर्शन के साथ समाजदर्शन और मानवीय-मूल्यों को यथार्थ रूप में उद्घाटित करता है।

आधुनिक युग में भारतीय मनीषा का उत्कर्ष जिन कुछेक विभूतियों से चरितार्थ हुआ है, उनमें से 'वेदज्ञ आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल' एक हैं। मुझे यह बेहद खुशी होती है कि आज 90 वर्ष की उम्र में भी परम् आराध्य गुरुवर श्री दुर्गाचरण शुक्ल की लेखनी निरन्तर चल रही है। निस्संदेह आधुनिक युग में ऐसे महापुरुष दुर्लभ ही हैं।

मैं ऐसे महामानव को कोटिशः प्रणाम करता हूँ और ईश्वर से उनके स्वस्थ और शतायु होने की मंगलकामनाएँ करता हूँ।

-डॉ. अवधेश कुमार